माउण्ट आबू का वैश्विक शिखर सम्मेलन...

पॉल्यूशन से सॉल्यूशन का सफर करेगा आसान

आज मनुष्य चिंता, तनाव, सम्बंधों में नफरत-घृणा की अग्नि में जल रहा है। एक-दूसरे के प्रति अविश्वास, प्रतिशोध की भावना ने सभी को अशांति और डर के घेरे में ले लिया है। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन एक आशा की किरण है। यहां की आध्यात्मिक ऊर्जा, शक्तिशाली वातावरण, इस संकुल में प्रवेश मात्र से ही सुकून देता है। ऐसे अलौकिक स्थान पर 'आध्यात्मिकता द्वारा स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज' विषय पर चार दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन का शुभारंभ भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने किया।

जिसमें भारत सरकार के कैबिनेट मंत्री, राज्यमंत्री, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, सांसद, विधायक, समाज सुधारक, सम्पादक, पत्रकार, पर्यावरणविद तथा शिक्षाविद सहित 15 देशों के 5000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन के डायमण्ड हॉल में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन में उद्घाटन सत्र सहित पाँच खुले सत्र, एक डायलॉग, दो स्पीरिचुअल टॉक तथा चार प्रैक्टिकल राजयोग मेडिटेशन पर अनुभूति सत्र का भी आयोजन हुआ। आध्यात्मिकता के साथ वैश्विक समस्याओं एवं समाधान पर चर्चा की गई। सभी ने खुले दिल से अपने विचार साझा किए।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

नोएडा से ज़ी मीडिया के प्रबंध संपादक महोदय राहुल सिन्हा ने कहा कि आज पृथ्वी पर तृतीय विश्व युद्ध का खतरा मंडरा रहा है। ऐसे में ऐसा सुंदर, दिल को सुकून देने वाला आध्यात्मिक वातावरण मैं यहां देख रहा हूँ। यहां हरेक के चेहरे पर संतुष्टता, मधुर व्यवहार की झलक दिखती है। संस्थान द्वारा ऐसा प्रयास आज विश्व के परिदृश्य में न सिर्फ आशा की किरण लाने वाला है बल्कि बदलाव का सही मार्ग दिखाने वाला है।

अनेक विशिष्ट लोगों ने कहा कि संस्थान द्वारा दी जा रही आध्यात्मिक शिक्षा ज़िंदगी को रोशन करने वाली है। यहां की शिक्षा 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' की नींव पर आधारित है। इसीलिए कारगर है जो यहां दिखाई दे रहा है। भारतीय परंपरा में जिस 'वसुधैव कुटुम्बकम' की परिकल्पना को हम सुनते आए, ये यहां साकार होता स्पष्ट नज़र आता है। वैश्विक शिखर सम्मेलन की थीम का एक संजीदा उदाहरण है यह संस्थान। जो भी इस परिवेश में पाँव रखता है, वो यहां की सकारात्मक ऊर्जा से चार्ज हो जाता है। यहां पर सिखाए जा रहे आध्यात्मिक मूल्य व मेडिटेशन की गहराई में जाकर सभी को सुख और शांति का अनुभव होता है, जिसकी आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में नितांत आवश्यकता है। राज्यपाल महोदय ने अपने विचार में बताया कि पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के चरित्र से है। यहां की अध्यात्म प्रेरक शिक्षा के माध्यम से बदलाव अवश्य आयेगा, क्योंकि पर्यावरण शुद्धि व्यक्ति के आचरण पर निर्भर है। व्यक्ति से समाज, समाज से विश्व और समस्त वातावरण का परिवर्तन अवश्य होगा।

एक पत्रकार महोदय का कहना है कि हम जानते हैं कि क्या सही है और क्या सही नहीं है। फिर भी हमारे कर्म में, व्यवहार में हम ला नहीं पाते। आज वातावरण में भिन्न-भिन्न तरह का पॉल्यूशन जैसे माइंड पॉल्यूशन, सामाजिक प्रदूषण, सम्बंधों में टकराव का प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, ईर्ष्या-द्वेष के वातावरण के प्रदूषण से मानव जूझ रहा है। जहाँ से हम सभी आये हैं, परंतु यहां पर आकर मुझे महसूस हो रहा है कि पॉल्यूशन और सॉल्यूशन के बीच का अंतर आध्यात्मिक जीवनशैली अपनाने से ही मिटेगा। जो इस शिखर सम्मेलन से अमृत निकलेगा वो सारे विश्व को प्रदूषण से मुक्त करेगा। ये हमें आशा ही नहीं अपितु विश्वास है। समापन सत्र के दौरान सम्मेलन का निष्कर्ष बिंदु रहा कि भारत को विश्व गुरु बनाने का कार्य हम आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से ही कर पायेंगे। और तब ही भारत सारे विश्व का सशक्त नेतृत्व करेगा।

एक सेकण्ड में बिन्दी लगाने के लिए चाहिए कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पॉवर

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा मुरली शुरू करते ही पहला शब्द कौन-सा बोलते हैं? ओम शान्ति। हमारा आदि मंत्र भी ओम शान्ति है। यह ओम शान्ति का महामंत्र सभी समस्याओं का समाधान है। लेकिन हम उस अर्थ स्वरूप में स्थित नहीं होते हैं इसलिए हमारी अशान्ति अभी तक जाती नहीं है। जैसे बल्ब के स्विच को ऑन करते हैं तो अन्धकार चला जाता है, ऐसे ही अगर हम ओम शान्ति शब्द के अर्थ में, उस स्वरूप में स्थित हो जायें तो जो भी समस्या है वह सहज समाप्त हो जायेगी क्योंकि आज की मूल समस्या है देहभान। देहभान ही भिन्न-भिन्न रूपों में समस्या को उत्पन्न करता है। कभी भी कोई समस्या आवे तो आप नोट करें कि इस समस्या का कारण किस प्रकार का देह अभिमान है? देह की वृत्ति, देहभान के संस्कार हैं तो कर्मेन्द्रियां उसी प्रकार के कर्म की तरफ आकर्षित होंगी। अभी उस देह भान को हमें मिटाना है तो क्या करें? सभी की चाहना है, उमंग है, बाबा भी बार-बार होमवर्क के रूप में इशारा दे रहे हैं।

तो जो बाबा ने कहा है वो करना ही है। सोचना नहीं है, कहना नहीं है। संगठन में हाथ तो सब उठा देते हैं, पर मन का हाथ नहीं उठाते हैं। मन में दृढ़ संकल्प का हाथ उठाना, यह है सच्चा हिम्मत का हाथ उठाना। तो अभी हमको इस देहभान के फाउण्डेशन को खत्म करना है। सिर्फ मैं आत्मा हूँ, यह कहना और इस स्वरूप में स्थित होके कहना, इसका अभ्यास और अटेन्शन(चेकिंग) कम है इसलिए मैं-मैं शब्द का प्रयोग ज़्यादा होता है। उसकी जगह बाबा-बाबा शब्द यूज़ में आ जाये। शुरू में बाबा ने मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, यह कूट-कूट के पक्का कराया। पहले तो आत्मा का ही ज्ञान था, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ। तो बाबा कहते थे चेक करो कि अभी मेरा मन कहाँ गया? क्या मैं आत्मा से बात कर रही हूँ या शरीर के भान में हूँ? हम लोगों ने इसका बहुत अभ्यास किया, चेकिंग करते थे। बात कर रही हूँ, तो किससे बात कर रही हूँ? सुन रही हूँ तो मैं कौन सुन रही हूँ? सुनाने वाले की दृष्टि और सुनने वाले की दृष्टि क्या है? मतलब आत्मा का ज्ञान बाबा ने बहुत पक्का कराया। अभी वह अभ्यास कम है। कामकाज में ज़्यादा रहते हैं और अभ्यास कम है। कामकाज करते भी हम आत्मा का पाठ पक्का कर सकते हैं क्योंकि बाबा ने हमको कहा है कि तुम कर्मयोगी हो। कर्मकर्ता नहीं हो। कर्म और योग दोनों का बैलेंस चाहिए। जो काम रहे हैं, उसी के संकल्प ज़्यादा चलते रहते तो कर्मयोगी नहीं बन सकते।

जैसे बाबा करनकरावनहार है, वैसे यह शरीर करनहार है और आत्मा करावनहार है। तो करावनहार माना मालिक। हम कर्मयोगी हैं, तो कर्म करते हुए भी बार-बार यह अभ्यास करें और चेक करते रहें, मैं आत्मा मालिक करावनहार बन कर्म करा रही हूँ। अगर मालिक होशियार नहीं है, अटेन्शन थोड़ा ढीला है इसलिए चेक करेंगे तो अभ्यास की तरफ ध्यान जायेगा। अगर हमारा मन किसी भी प्रकार से देहभान के वैरायटी रूपों में प्रभावित है, तो एक सेकण्ड में बिन्दी नहीं लगा सकेंगे क्योंकि उसके लिए कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पॉवर चाहिए। संस्कार के वश हुए तो मन कन्ट्रोल में नहीं है ना! वृत्ति कहाँ चली जाती है, मन पर कन्ट्रोल नहीं है। तो बार-बार चेक करें कि सारे दिन में स्वराज्य अधिकारी रहे? कर्मेन्द्रियों के अधिकारी बनना है। जो बात हुई, अगर उसका ही संकल्प चलता रहता है तो यह साधारणता है। हम विश्व में न्यारे हैं, स्वराज्य अधिकारी हैं, तो उस अधिकार के रूप में मन को चलायें, क्योंकि मन ही धोखा देता है।

कर्म करते हुए भी बार-बार यह अभ्यास करें और चेक करते रहें, मैं आत्मा मालिक करावनहार बन कर्म करा रही हूँ। अगर मालिक होशियार नहीं है, अटेन्शन थोड़ा ढीला है इसलिए चेक करेंगे तो अभ्यास की तरफ ध्यान जायेगा।

हरेक अपने अन्दर झांक कर देखें कि मैं दिन में कितना बारी बाबा को देखती हूँ...!

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा ने सिखाया है, मुरली सुनने के बाद मुरली रिवाइज़ करनी चाहिए। मुरली सुनने के बाद बाबा हमको पैदल लेकर जाता था। अगर कोई सेवा है तो भी कम से कम 10 मिनट शान्त में रह मुरली को रिवाइज़ करके फिर सेवा में लगो। जिसको रिवाइज़ करने का रस बैठा है, वो कार्य करते भी मीठे बाबा के बोल जो सुने हैं, उन्हें अन्दर से भूलते नहीं हैं। याद नहीं करने पड़ते हैं, जिसको और बातें याद करनी पड़ती हैं उन्हें बाबा की याद भूल जाती है, अटपटी बातें, खटपटी बातें याद रहती हैं। कई हैं जो ऐसी चटपटी बातें करते हैं जो सबको अपनी तरफ खींच लेते हैं। खटपटी बातें जिनका कोई अर्थ नहीं है, ऐसी बातों में अपना कितना समय गंवाते हैं, यह अपने आप से पूछो। जिसको मीठे बाबा की बातें दिल में अच्छी लगती हैं, उनके सामने ये बातें कोई करेगा नहीं, यह अनुभव है। हमेशा आकर्षण और उलझन में रहने वालों के आगे यह बातें आती हैं इसलिए बाबा कहते हैं सम्भालो अपने आपको। रोज़ सुबह अमृतवेले यहाँ आने के पहले बाबा की ऐसी मीठी बातें, नई बातें याद करो। तो अमृतवेले नींद नहीं आयेगी। रमणीक बातें, हर्षितमुख बनाने वाली बातें याद करो।

अभी हम छोटे बच्चे नहीं है, छोटे हैं माना अभी बाबा की बातों को धारण करने में छोटे हैं माना बेबी बुद्धि, उन्हें अच्छा लगता है पर कर नहीं पाते हैं। दूसरे हैं बुद्धू, बुद्धि से काम नहीं लेते हैं। बाबा दिव्य बुद्धि दाता है, राइट-रॉन्ग, सच-झूठ, बाबा सब स्पष्ट सुना देता है।

यह बातें जीवन में सदा हैं तो कोई बात कठिन नहीं है। बात आई बात चली गयी, हम बाबा के पास बैठ गये। बाबा हमारा गाइड है, भले कोई पावन बन रहा है लेकिन उनका कोई गाइड नहीं है, बाबा तो हमारा गाइड है। पहली बात बाबा के बने हैं, अगर भूलें करेंगे तो बाबा कहते एडॉप्शन रद्द हो जायेगी। भले बाबा ने चुनके कहाँ-कहाँ से लिया है। पर ऐसी बुद्धि बदल जाती है जो बाबा भी दिल से नहीं निकलता। दिल में कुछ और बात है। मुख्य पहली बात है- दिल से बाबा तभी निकलता है, जब कोई भी बात सुनते-देखते न देखो। सी फादर, फॉलो फादर, यह बात मुझे कभी भूली ही नहीं। हर एक अन्दर जाकर देखें कि मैं दिन में कितना बारी बाबा को देखती हूँ। बाबा के सिवाय और किसी को तो नहीं देखती हूँ। फिर बाबा कहते बच्चे, जो कुछ बात हुई, ड्रामा। फिनिश। इसने रॉन्ग किया, इसने राइट किया, तुमको ये चिंतन करने के लिए किसने कहा है! बुरा किया या अच्छा किया, तुम्हारा क्या जाता है! इसी चिन्तन में मैं मरूं तो मेरा क्या हाल होगा! यह ध्यान रखना चाहिए कि खराब चिन्तन में रहने की आदत है तो जब वो मरेगा तो उसके चिंतन में वही आयेगी क्योंकि मरने की तैयारी हम पहले से कर रहे हैं।

तो व्यर्थ चिंतन में आयेगा इसलिए प्रभु चिन्तन में जो मरे वो वैकुण्ठ रस पाये। जिसको वैकुण्ठ याद होगा वही वाया परमधाम, शान्तिधाम, सुखधाम जा सकेंगे। राज्य पद तो पीछे मिलेगा लेकिन अधिकारीपन का नशा अभी से है। अन्दर से निरहंकारी और अधिकारी हैं। जितनी सत्यता है उतनी नम्रता है।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

अब हमारी अवस्था ऐसी हो- धरती पर पांव हैं तो सेवा अर्थ...

बाबा ने हम बच्चों को ऐसी समझ दी है जो हमें भटकने से छुड़ाती जाती है। मनुष्यों को भक्ति भी बहुत भटकाती है, तो विकार भी भटकाते हैं। विकारों के वशीभूत आत्मा विकारों से छुटकारा पाये- यह बड़ा मुश्किल है। विकारों की कमज़ोरी परमात्मा बाप का बनने नहीं देती। कमज़ोरी सत्यानाश कर देती है। विकारों पर विजय पाने के लिए गुप्त योगी बनना पड़े। शो करने वाला नहीं। शो करने वाला कभी भी भागन्ती हो सकता है। ऊपर से कहेंगे बाबा-बाबा लेकिन अन्दर से जो सच्चा प्यार चाहिए, वह नहीं। बाबा के साथ भी बाबा को झूठा प्यार दिखायेंगे। अन्दर होगी ठगी, चोरी... दूसरे किसी को प्यार करते होंगे ज़रूर। कोई सम्बिन्धयों को प्यार करते होंगे, कोई धन-दौलत से करते होंगे... फिर पार्ट बाबा के साथ ऐसा बजायेंगे, बाबा यह सब तो आपका है। परन्तु एक भी चीज़ को हाथ लगाने नहीं देंगे। अगर तन-मन-धन सब तेरा कहा तो तेरा माना सदा उसकी सेवा में हाज़िर। मन तेरा माना कहाँ भी भटक नहीं सकता। एक बाबा दूसरा न कोई। धन तेरा है माना मेरे पास धन नहीं, जो खिलाओ, जहाँ बिठाओ।

हम बाबा के बच्चे बेफिकर बादशाह हैं, फकीर नहीं हैं लेकिन मस्त फकीर हैं। जहाँ पांव रखें वहाँ बाबा की सेवा। नहीं तो हमको ज़रूरत नहीं है धरती पर पांव रखने की। अब हमारी अवस्था ऐसी हो- धरती पर पांव हैं तो सेवा अर्थ हैं, नहीं तो ऊपर भी हमारे लिए बहुत सर्विस है। चारों ओर सर्विस है। अगर बाबा सेकण्ड में आ जा सकता है तो हम भी तो बाबा के बच्चे सेकण्ड में आ जा सकते हैं! बाबा पतित तन में आया लेकिन भूमि ऐसी पावन बनाई जहाँ आत्मायें आकर पावन बनें। सेन्टर्स फायर ब्रिगेड हैं, जहाँ आग लगे बचाने के लिए, दुनिया के हर कोने में फायर ब्रिगेड हैं। लेकिन बचकर कहाँ जायेंगे? बाबा का घर देख लिया है। विनाश के समय स्थूल में नहीं पहुंचेंगे तो बुद्धि से तो पहुंच ही जायेंगे। इतना हमारा अभ्यास हो, यहाँ आग लग रही है और हम ऊपर चले जाएं। सेकण्ड में अशरीरी बनने की प्रैक्टिस हो, इसकी रिहर्सल करो। हमारे अन्दर बाबा की इतनी याद हो जो कोई भी आत्मा को हमारा यह शरीर दिखाई न पड़े।